दिनांक 19-09-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

शक्तियों एवं पाण्डवों की विशेषताएँ व सर्व अधिकार और बेहद के वैराग्य वाला ही राजऋषि

विश्व कल्याणकारी स्वरूप में स्थित होते जाओ
सर्व शक्तियों का वरदान तुम सबको देते जाओ

उमंग उत्साह रखकर ईश्वरीय ज्ञान पढ़ते जाओ
अपने सेवा केन्द्र की तुम रूहानी रौनक बढ़ाओ

ईश्वरीय ज्ञान सुनकर तुम खुद में समाते जाओ
बाप समान बनकर सबको ज्ञान स्वरूप बनाओ

बाप के संग खुद को कमल पुष्प समान बनाओ
सम्बन्ध सम्पर्क में आकर न्यारे प्यारे कहलाओ

हर वायुमण्डल में कर्म योग का बैलेंस बनाओ
हलचल भरे माहौल में खुद को अचल बनाओ

रूहानी गुलाब की स्थिति में स्थित होते जाओ
रूहानी दृष्टि से सदा मस्तकमणि देखते जाओ

विश्व महाराजा बनने लिए राजऋषि बन जाओ
सर्व अधिकारों के संग बेहद का वैराग्य जगाओ

अपनी सर्व इन्द्रियों पर खुद का राज्य चलाओ
भविष्य में जाकर डबल राज्य अधिकार पाओ

पुरानी देह और दुनिया का आकर्षण मिटाओ
सारे संसार को कब्रिस्तान अनुभव करते जाओ

औरों को कल्याण की भावना से देखते जाओ
विश्व सेवाधारी होने का अनुभव करते जाओ

हर परिस्थिति और परीक्षाओं में विजय पाओ
त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म को श्रेष्ठ बनाओ